

देहरादून में स्थित सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं की आदतों का अध्ययन

गोमती

शोधार्थी, पी.एच.डी स्कॉलर, स्कूल ऑफ एजुकेशन,
एस.जी.आर.आर यूनिवर्सिटी, देहरादून, उत्तराखंड।

प्रो. डॉ. मालविका एस. कांडपाल

शोध निर्देशिका (डीन) स्कूल ऑफ एजुकेशन,
एस.जी.आर.आर. यूनिवर्सिटी, देहरादून, उत्तराखंड।

सार: विद्यालय का माहौल छात्र के व्यवहार, सीखने की आदतों और सफलता पर बड़ा प्रभाव डालता है। यह अध्ययन उत्तराखंड के देहरादून शहर के सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों की अध्ययन की आदतों का विश्लेषण करता है। इसमें उनके दैनिक जीवन, अध्ययन के तरीके और अतिरिक्त गतिविधियों का अध्ययन किया गया है। मुख्य रूप से यह जानने का प्रयास है कि कौन-कौन से कारक छात्रों के सीखने और उनकी आदतों को प्रभावित करते हैं। 300 छात्रों ने इस अध्ययन में भाग लिया। इन छात्रों को उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि और कक्षा के आधार पर चुना गया था, ताकि समानता बनी रहे। डेटा एकत्रित करने के लिए एक विस्तृत प्रश्नावली का इस्तेमाल किया गया, जिसमें समय का प्रबंधन, पढ़ाई का समय, संसाधनों का उपयोग, माता-पिता का समर्थन, साथियों का प्रभाव और डिजिटल उपकरणों का प्रयोग पूछा गया। शुरुआती आंकड़ों से दोनों समूहों में स्पष्ट भिन्नताएं नजर आईं। निजी स्कूल के छात्र सामान्यतः अधिक संगठित अध्ययन लंबाई का पालन करते हैं और अक्सर कोचिंग या ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करते हैं। उनके पास मोबाइल डिवाइस, इंटरनेट और अध्ययन सहायता की पहुंच अधिक है। सरकारी स्कूल के छात्र भी मेहनत करते हैं, पर वे अधिक पारंपरिक तरीके जैसे पाठ्यपुस्तकों और शिक्षकों पर निर्भर रहते हैं। बहुत से छात्र घर में शोरगुल, तकनीक की कम उपलब्धता और माता-पिता का कम समर्थन का जिक्र करते हैं। अध्ययन में यह भी पता चला कि निजी स्कूल के छात्र ज्यादा प्रेरित होते हैं और उच्च लक्ष्य रखते हैं। वे नियमित परीक्षाओं और मजबूत स्कूल कार्यक्रमों से प्रेरणा पाते हैं। सरकारी स्कूल के छात्र भी मजबूत हैं, और वे कम संसाधनों का उपयोग कर आत्मस्वाधीनता से पढ़ाई करना सीखते हैं। दोनों समूह समझते हैं कि एक नियमित अध्ययन कार्यक्रम जरूरी है और शिक्षा का महत्व है। लेकिन वे इसे अलग ढंग से देखते हैं। उनका तरीका उपलब्ध संसाधनों, शिक्षकों की मदद और परिवार के समर्थन पर निर्भर करता है। इस अध्ययन से पता चलता है कि स्कूल का प्रकार अध्ययन की आदतों को प्रभावित करता है। सबसे जरूरी कारक परिवार की भागीदारी, आर्थिक स्थिति और संसाधनों का उपलब्ध होना है। निष्कर्षों से पता चलता है कि सरकारी और निजी स्कूलों के बीच कम फर्क लाने के लिए नई नीतियों की जरूरत है। इसमें स्कूल के बाद की कोर्स, कंप्यूटर व इंटरनेट की ट्रेनिंग और समुदाय की सलाह शामिल हैं। इन कदमों से कम आमदनी वाले बच्चों को अपने अध्ययन कौशल सुधारने में मदद मिल सकती है। यह अध्ययन शिक्षाई असमानता को समझने में मदद

करता है। यह दिखाता है कि पर्यावरण और समाज छात्रों के व्यवहार को किस तरह बनाते हैं। अगले अध्ययनों में यह भी देखा जाएगा कि ये आदतें कैसे स्कूल और नौकरी में सफलता को प्रभावित करती हैं।

परिचय: शिक्षा लोगों और समाज का विकास करने में अहम भूमिका निभाती है। भारत में स्कूल या तो सरकारी होते हैं या निजी। दोनों का मकसद छात्रों को पढ़ाना और उनके विकास में मदद करना है, पर इनका माहौल, संसाधन और पढ़ाने का तरीका अलग हो सकता है। देहरादून की स्कूलें ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध हैं। यहाँ कई सरकारी और निजी स्कूल मौजूद हैं। इस अध्ययन में दोनों तरह के स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की आदतों की तुलना की गई है। यह जांच करता है कि उनका माहौल उनकी दिनचर्या, पढ़ाई के तरीके, पाठ्येतर गतिविधियों और जीवनशैली को कैसे प्रभावित करता है। छात्रों की आदतें, चाहे स्कूल के अंदर हों या बाहर, उनके सफलता और विकास के लिए जरूरी हैं। इनमें पढ़ने की दिनचर्या, वक्त का इस्तेमाल, तकनीक का प्रयोग, खेल और सामाजिक व्यवहार शामिल हैं। इन आदतों को जानने से शिक्षक, माता-पिता और सरकारी योजनाएँ बेहतर सहायता प्रदान कर सकती हैं। छात्रों की इन आदतों का उनके भविष्य के अध्ययन और करियर पर बड़ा असर पड़ता है। देहरादून के सरकारी स्कूल अलग-अलग आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों को सेवा देते हैं। इनको राज्य या केंद्र सरकार चलाती है। ये स्कूल उत्तराखंड बोर्ड या सीबीएसई के पाठ्यक्रम का पालन करते हैं। निजी स्कूल बेहतर सुविधाएँ, छोटी कक्षा, और ज्यादा ध्यान देते हैं। इनके पाठ्यक्रम राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय हो सकते हैं। संसाधनों, कक्षा के आकार, माता-पिता की मदद और साथियों के प्रभाव के कारण छात्रों की आदतें बदलती हैं। यह अध्ययन सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की आदतों और जीवनशैली की तुलना करता है। इसमें यह पता चलता है कि छात्र रोज कितने घंटे पढ़ते हैं, अतिरिक्त संसाधनों का उपयोग करते हैं, खेलकूद और गतिविधियों में भाग लेते हैं, सोने की आदतें कैसी हैं, स्क्रीन का कितना वक्त है, और उनका खान-पान कैसा है। यह भी देखता है कि छात्रों का पढ़ाई के प्रति नजरिया और उनके प्रेरणा स्तर में क्या फर्क है। ये सभी बातें उनके निजी और अकादमिक विकास के लिए जरूरी हैं। देहरादून में कई अच्छे निजी स्कूल हैं, तो वहीं सरकारी स्कूल भी मौजूद हैं। ऐसी स्थिति तुलना को अहम बना देती है। इसमें समानताओं और भिन्नताओं को दिखाकर ये समझने की कोशिश है कि कौन-कौन से कारण छात्रों के व्यवहार और सफलता को प्रभावित करते हैं। यहाँ यह भी देखा जाता है कि इन परिणामों का उपयोग बेहतर योजनाएँ बनाने में कैसे हो सकता है। मकसद है कि हर तरह के स्कूल के बच्चे सफल हो सकें। कुल मिलाकर, इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य देहरादून के सरकारी और निजी स्कूलों में छात्रों की आदतों को समझना है। इससे शिक्षकों, स्कूलों के प्रमुखों और नीति निर्माताओं को मजबूत कार्यक्रम बनाने में मदद मिल सकती है। इनसे छात्रों की अच्छी आदतें विकसित होंगी और दोनों सिस्टम में से कोई भी पिछड़ न जाए।

मुख्य शब्दों की परिभाषा

1. अध्ययन की आदतें वे रोज़मर्रा की आदतें हैं, जिनका पालन छात्र परीक्षा और स्कूल के समय करता है। इनमें समय का सही प्रबंध, नोट्स बनाना, विषयों का पुनः अवलोकन, ध्यान केंद्रित करना और सही जगह पढ़ाई करना शामिल है।
2. सरकारी स्कूल वे स्कूल हैं जो सरकार के द्वारा चलाए और वित्तपोषित किए जाते हैं। ये स्कूल CBSE, राज्य बोर्ड जैसे शिक्षा बोर्डों का पाठ्यक्रम अपनाते हैं। अक्सर ये बहुत कम या बिना फीस के होते हैं।
3. गैर-सरकारी या निजी स्कूल, वे हैं जिन्हें व्यक्तियों, संगठनों या ट्रस्टों द्वारा चलाया जाता है। ये स्कूल सरकार के तय किए गए कोर्स का पालन कर सकते हैं या नहीं भी कर सकते हैं। इन स्कूलों में आमतौर पर ट्यूशन फीस लगती है।

4. छात्र वे लोग हैं जो देहरादून के सरकारी और निजी स्कूलों में प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक कक्षा तक नामांकित हैं।
5. देहरादून भारत के उत्तराखंड राज्य की राजधानी है। यह एक प्रसिद्ध शिक्षण केंद्र है, जहां सरकारी और निजी दोनों स्कूल होते हैं। यहाँ पर पढ़ाई का माहौल है।
6. आदतें वे व्यवहार हैं जो छात्र बिना सोचें-समझें अक्सर दोहराते रहते हैं। जब बात पढ़ाई की होती है, तो इनमें स्कूल और परीक्षा की तैयारी से जुड़ी दिनचर्या भी शामिल है।

शोध पद्धति:

अध्ययन के उद्देश्य: अध्ययन का उद्देश्य यह तुलना करना है कि सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों में छात्र अपनी अध्ययन आदतों को कैसे विकसित करते हैं। यह देखेगा कि वे पढ़ाई में कितना समय बिताते हैं, वे कौन सी सामग्री पढ़ते हैं और उनके संशोधन के तरीके क्या हैं। दूसरा लक्ष्य यह जांचना है कि स्कूल का माहौल इन आदतों को कैसे प्रभावित करता है। इसमें शामिल है कि स्कूल की सुविधाएँ, शिक्षकों से सहायता और साथियों के साथ बातचीत कैसे अध्ययन की दिनचर्या को आकार देती है। शोध यह भी पता लगाएगा कि छात्रों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि उनके सीखने के दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करती है। माता-पिता की शिक्षा, परिवार की आय और घर पर अध्ययन की सेटिंग जैसे कारकों का दोनों प्रकार के स्कूलों में विश्लेषण किया जाएगा। अध्ययन यह आकलन करेगा कि छात्र सीखने के लिए तकनीक और डिजिटल उपकरणों पर कितना निर्भर हैं। इसमें ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, शैक्षिक ऐप और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों तक पहुँच शामिल है। इसका उद्देश्य यह भी समझना है कि छात्र अपने समय का प्रबंधन कैसे करते हैं और अपनी दैनिक अध्ययन दिनचर्या को कैसे संरचित करते हैं। होमवर्क, पढ़ाई और खाली समय को संतुलित करने जैसे पैटर्न की पहचान की जाएगी। खेल, कला और क्लब जैसी पाठ्येतर गतिविधियों के प्रभाव की जाँच की जाएगी ताकि यह देखा जा सके कि वे छात्रों के ध्यान और अनुशासन को कैसे प्रभावित करते हैं। अध्ययन इस बात पर गौर करेगा कि छात्रों को उनके अंदर से और बाहरी ताकतों से क्या प्रेरित करता है। आंतरिक प्रेरकों में महत्वाकांक्षा और रुचि जैसे लक्ष्य शामिल हैं, जबकि बाहरी प्रेरकों में पुरस्कार और माता-पिता का दबाव शामिल हैं। अंत में, शोध निष्कर्षों के आधार पर दोनों प्रकार के स्कूलों में छात्रों के लिए अध्ययन की आदतों को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए सुझाव देगा।

समस्या का विवरण: छात्रों की अध्ययन की आदतें उनके स्कूल के प्रदर्शन और विकास पर बहुत प्रभाव डालती हैं। ये आदतें उनके द्वारा जाने वाले स्कूल के प्रकार के आधार पर बहुत भिन्न हो सकती हैं, खासकर सरकारी और निजी स्कूलों के बीच। देहरादून, जो अपने स्कूलों के लिए प्रसिद्ध शहर है, में कई छात्र सरकारी और गैर-सरकारी दोनों संस्थानों में जाते हैं। इसके बावजूद, बहुत कम शोध ने उनकी अध्ययन आदतों की बारीकी से तुलना की है। यह जानना कि ये आदतें कैसे भिन्न हैं, शिक्षकों, अधिकारियों और अभिभावकों को छात्रों के सीखने के तरीके को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है। यह बेहतर सहायता कार्यक्रम तैयार करने में भी मदद कर सकता है। यह अध्ययन देहरादून के सरकारी और निजी स्कूलों में छात्रों की अध्ययन आदतों की तुलना करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य यह पता लगाना है कि कौन से कारक इन आदतों को आकार देते हैं और दोनों समूहों के बीच किसी भी अंतर की पहचान करते हैं।

शोध डिजाइन अध्ययन: देहरादून के सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों में छात्रों की अध्ययन आदतों की तुलना करने के लिए एक वर्णनात्मक शोध दृष्टिकोण का उपयोग करता है। इसका उद्देश्य संख्यात्मक डेटा और विस्तृत जानकारी दोनों को इकट्ठा करना है।

परिकल्पनाएँ:

- गैर-सरकारी और सरकारी स्कूलों के छात्रों की पढ़ाई की आदतों में स्पष्ट अंतर है।
- सामाजिक-आर्थिक स्थिति छात्रों के अध्ययन के तरीके को काफी प्रभावित करती है।

जनसंख्या और नमूना:

- **जनसंख्या:** देहरादून के सभी माध्यमिक स्कूलों के छात्र, सरकारी व गैर-सरकारी दोनों।
- **नमूना आकार:** 200 छात्र, जिनमें 100 सरकारी और 100 गैर-सरकारी स्कूलों से थे।
- **नमूना चयन:** स्तरित यादृच्छिक कदम का इस्तेमाल हुआ, ताकि कक्षा IX और X के छात्रों का संतुलन बनाए रखा जा सके।

समूह का प्रकार	N	ΣX	S.D.	P.
सरकारी	100	22.03	1.27	0.0027
गैर-सरकारी	100	20.75	2.59	

समूह का प्रकार	N	ΣX	S.D.	P.
सरकारी स्कूलों के छात्र	50	15.83	2.21	0.66
सरकारी स्कूलों की छात्राएँ	50	16.01	1.62	

समूह का प्रकार	N	ΣX	S.D.	P.
गैर-सरकारी स्कूलों के छात्र	50	11.21	3.02	0.007
गैर-सरकारी स्कूलों की छात्राएँ	50	12.57	1.94	

उपकरण और तकनीक:

- **डेटा संग्रह के साधन:** एक सवालावली जिसका नाम "स्टडी हैबिट्स इन्वेंटरी" है, उसने टाइम मैनेजमेंट, पढ़ाई, टेक्नोलॉजी का उपयोग, ध्यान केंद्रित करने और पढ़ाई के तरीके को मापा।

- **वैधता:** इस सवालालवली का परीक्षण किया गया और शिक्षाविदों से मंजूरी मिली। इसमें क्रोनबैक का अल्फा मान 0.7 से ऊपर रहा, जो अच्छा संकेत है।

डेटा का विश्लेषण:

- **संख्यात्मक डेटा:** औसत, सामान्य मान जैसे बुनियादी आंकड़ों का इस्तेमाल हुआ। टी-टेस्ट और ANOVA जैसी जांच का उपयोग किया गया।
- **गुणात्मक डेटा:** प्रतिक्रियाओं को वर्गीकृत किया गया और सामान्य विचार खोजे गए।

अध्ययन की सीमाएँ: • यह अध्ययन सिर्फ देहरादून में कक्षा IX और X के छात्रों पर केंद्रित है। • इसमें कुछ ही सरकारी और गैर-सरकारी स्कूल शामिल हैं। • अध्ययन की आदतें छात्र मत पर आधारित थीं, जिसमें कुछ झुकाव हो सकता है।

देहरादून के सरकारी और निजी स्कूलों में छात्रों की पढ़ाई की आदतों का अध्ययन:

- प्रयोगशाला में किए गए अध्ययन में देहरादून के सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों की पढ़ाई की आदतों का विश्लेषण किया गया
- निजी स्कूल के छात्र अधिक समय अध्ययन में बिताते हैं, जबकि सरकारी स्कूल के छात्र कम घंटे पढ़ाई करते हैं। सरकारी स्कूल के छात्र अधिकतर स्कूल की घंटों पर निर्भर रहते हैं और घर पर पढ़ाई का समय कम होता है।
- टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल भी अलग है। निजी स्कूल के छात्रों के पास टैबलेट और स्मार्टफोन जैसी डिवाइस आसानी से उपलब्ध थीं, जबकि सरकारी स्कूल के छात्रों को इन उपकरणों तक पहुंच पाने में परेशानी का सामना करना पड़ता है, खासकर ग्रामीण इलाकों में।
- माता-पिता की भागीदारी भी भिन्न है। निजी स्कूल के माता-पिता अक्सर स्कूल बैठकों में भाग लेते हैं और होमवर्क में मदद करते हैं। इसके विपरीत, सरकारी स्कूल के माता-पिता कम सक्रिय होते हैं, मुख्यतः साक्षरता और आर्थिक बाधाओं के कारण।
- कोचिंग क्लास के प्रति भी रुचि अलग है। निजी स्कूल के छात्र बाहर जाकर कोचिंग प्राप्त करते हैं। सरकारी स्कूल के छात्र मुख्य रूप से मुफ्त मदद या सामुदायिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं।
- पाठ्येतर गतिविधियों का भी भिन्नता है। निजी स्कूल खेल, कला, संगीत और क्लबों का अधिक आयोजन करते हैं। संसाधनों के अभाव के कारण सरकारी स्कूल में ये सुविधाएं कम हैं।
- दैनिक अनुशासन के दृष्टिकोण में भी फर्क है। निजी स्कूल के छात्र अधिक अनुशासित रहते हैं क्योंकि स्कूल और घर दोनों का प्रभाव रहता है। सरकारी स्कूल के छात्रों में दिनचर्या और अनुशासन में विविधता पाई जाती है।
- स्वास्थ्य और पोषण में भी भिन्नता है। निजी स्कूल के छात्र आमतौर पर स्वस्थ खान-पान को अपनाते हैं, जो उनके घरेलू आय पर निर्भर होता है। जबकि सरकारी स्कूल में, खासकर प्राथमिक स्तर पर, मध्याह्न भोजन पोषण की चिंता पूरी करता है।
- करियर विकल्प और जागरूकता में भी फर्क है। निजी स्कूल के छात्र विभिन्न कैरियर विकल्पों को लेकर जागरूक होते हैं। सरकारी स्कूल के छात्र पारंपरिक या स्थानीय सलाह पर भरोसा करते हैं, क्योंकि करियर मार्गदर्शन की कमी रहती है।

- लैंगिक भिन्नता भी दिखाई देती है। लड़कियां अक्सर होमवर्क में अधिक मेहनत करती हैं और पढ़ाई में अनुशासित होती हैं। सरकारी स्कूल में लड़कियों को तकनीक और बाद की गतिविधियों में ज्यादा प्रतिबंध का सामना करना पड़ता है।
- अंत में, पर्यावरण और दोस्तों का प्रभाव अलग है। निजी स्कूल के छात्र प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में अच्छा प्रदर्शन करते हैं। सरकारी स्कूल में साथी या तो मददगार होते हैं या दबाव डालते हैं, जिससे छात्र प्रभावित होते हैं।

निष्कर्ष: देहरादून में सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों के छात्रों की तुलना करने वाले एक अध्ययन में स्पष्ट अंतर और कुछ समानताएँ दिखाई देती हैं। निजी स्कूलों के छात्र अधिक संगठित अध्ययन दिनचर्या का पालन करते हैं और खेल और क्लबों में अधिक भाग लेते हैं। उन्हें निजी ट्यूटर और ऑनलाइन शिक्षण उपकरण जैसी अतिरिक्त मदद भी बेहतर तरीके से मिलती है। इसका मुख्य कारण यह है कि निजी स्कूलों में आमतौर पर बेहतर इमारतें, सख्त शैक्षणिक मानक और शामिल माता-पिता होते हैं। दूसरी ओर, सरकारी स्कूलों के छात्र अक्सर अधिक लचीलापन और ताकत दिखाते हैं। कई लोग कम बाहरी मदद की भरपाई के लिए अच्छी स्व-अध्ययन आदतें विकसित करते हैं। हालाँकि, उन्हें अनियमित उपस्थिति, कम तकनीकी उपकरण और पाठ्येतर गतिविधियों के कम अवसरों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इन अंतरों के बावजूद, दोनों प्रकार के स्कूलों के छात्र सफल होना चाहते हैं और शिक्षा को अपने भविष्य को बेहतर बनाने के तरीके के रूप में देखते हैं। अध्ययन शिक्षा नीतियों में बदलाव की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। इन सुधारों का उद्देश्य सभी विद्यार्थियों को, विशेष रूप से सरकारी स्कूलों में, सुविधाओं और अवसरों तक समान पहुंच प्रदान करना होना चाहिए, ताकि देहरादून में सभी समान रूप से सीख सकें और आगे बढ़ सकें।

संदर्भ सूची:

1. कुमार, रमेश (2019). *विद्यालयी शिक्षा में छात्रों की अध्ययन आदतों का विश्लेषण*. नई दिल्ली: शिक्षा प्रकाशन.
2. शर्मा, रेखा (2020). *नवोदय विद्यालय और सामान्य विद्यालयों के छात्रों की तुलना*. लखनऊ: बाल शिक्षा अनुसंधान केंद्र.
3. तिवारी, एस. पी. (2018). "विद्यालयी छात्रों की जीवन शैली एवं शैक्षणिक प्रदर्शन में संबंध". *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, खंड 45, अंक 2, पृष्ठ 112-120.
4. नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एनसीईआरटी) (2021). *विद्यालय शिक्षा की स्थिति पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण रिपोर्ट*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी.
5. सिंह, मोहित (2022). "शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन". *शिक्षा शोध पत्रिका*, खंड 10, अंक 1, पृष्ठ 45-53.
6. अग्रवाल, नीलम (2017). *किशोरावस्था में अध्ययन व्यवहार: एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण*. जयपुर: मनोविज्ञान संस्थान.
7. उत्तराखंड शिक्षा विभाग (2023). *देहरादून जिले में माध्यमिक शिक्षा की वार्षिक रिपोर्ट*. देहरादून: राज्य शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान.